Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

भारतीय संस्कृति में नारी की परंपरागत भूमिका और 21वीं सदी में उसका परिवर्तन

शशि प्रभा सिंह चौहान
शोध छात्रा, इतिहास विभाग, इस्माईल (पी०जी०) कॉलिज, मेरठ
डॉ० अनीता राठी
प्रोफेसर एवं प्राचार्य, इस्माईल (पी०जी०) कॉलिज, मेरठ

सारांश

भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान अत्यंत सम्माननीय और विशिष्ट रहा है। वैदिक काल में स्त्रियाँ विदुषी, ऋषिकाएँ और सामाजिक जीवन की सक्रिय सहभागी थीं। परंतु समय के साथ–साथ पितृसत्तात्मक व्यवस्था और सामाजिक रूढ़ियों ने उनके अधिकारों को सीमित किया, जिसके परिणामस्वरूप नारी की भूमिका गृहिणी और पारिवारिक दायरे तक सिमटकर रह गई। मध्यकालीन भारत में पर्दा प्रथा, सती प्रथा और बाल विवाह जैसी कुप्रथाओं ने नारी की स्वतंत्रता को और बाधित किया। किन्तु 19वीं और 20वीं शताब्दी में हुए सामाजिक सुधार आंदोलनों तथा स्वतंत्रता संग्राम में महिला सहभागिता ने एक नए जागरण की नींव रखी।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारतीय संविधान ने स्त्रियों को समानता, शिक्षा, रोजगार और राजनीतिक अधिकार प्रदान किए। विभिन्न कानूनी प्रावधानों और आरक्षण नीतियों ने महिलाओं को सामाजिक एवं राजनीतिक परिदृश्य में नई पहचान दी। विशेषतः 21वीं सदी में नारी की भूमिका में व्यापक परिवर्तन देखा गया है। महिलाएँ अब शिक्षा, विज्ञान, तकनीक, प्रशासन, राजनीति और उद्यमिता जैसे क्षेत्रों में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं। डिजिटल युग ने उन्हें आत्म–अभिव्यक्ति और आर्थिक स्वतंत्रता के नए अवसर प्रदान किए हैं।

फिर भी नारी सशक्तिकरण की राह में अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में शिक्षा तथा अवसरों की असमानता, लैंगिक भेदभाव, घरेलू हिंसा और कार्यस्थल पर उत्पीड़न आज भी महत्वपूर्ण अवरोध बने हुए हैं। इसके बावजूद, 21वीं सदी की भारतीय नारी परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन स्थापित कर रही है।

मुख्य शब्दः भारतीय संस्कृति, नारी की परंपरागत भूमिका, स्वतंत्रता संग्राम, संवैधानिक अधिकार, 21वीं सदी, नारी सशक्तिकरण, पितृसत्ता और चुनौतियाँ, परंपरा और आधुनिकता।

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति का मूल स्वरूप "नारी–प्रधान" परंपराओं से परिपूर्ण रहा है। प्राचीन भारतीय चिंतन में स्त्री को "शक्ति" और "सृष्टि की जननी" के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। वैदिक साहित्य में नारी को शिक्षा, स्वतंत्रता और सम्मान की दृष्टि से पुरुष के समकक्ष माना गया है। ऋग्वेद में घोषिता, अपाला, लोपामुद्रा और मैत्रेयी जैसी विदुषी स्त्रियों का उल्लेख मिलता है, जिन्होंने न केवल ज्ञानार्जन किया बल्कि वैदिक ऋचाओं की रचना भी की।[i] परंतु समय के साथ सामाजिक संरचना में परिवर्तन आया और नारी की भूमिका सीमित होती चली गई। भारतीय समाज में नारी की स्थिति को समझना अत्यंत प्रासंगिक है क्योंकि यह न केवल सांस्कृतिक मूल्यों की झलक प्रस्तुत करता है, बल्कि आधुनिक सशक्तिकरण की प्रक्रिया की दिशा भी इंगित करता है। समकालीन परिप्रेक्ष्य में जब नारी शिक्षा, राजनीति, विज्ञान और प्रशासन के क्षेत्र में अपनी नई पहचान बना रही है, तब उसकी ऐतिहासिक यात्रा का अध्ययन और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। जैसा कि कुमार लिखते हैं "भारतीय संस्कृति में नारी का योगदान केवल परिवार तक सीमित नहीं था, बल्कि वह ज्ञान, धर्म और समाज सुधार की आधारशिला भी रही है।"[ii]

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

इस शोध का प्रमुख उद्देश्य भारतीय संस्कृति में नारी की परंपरागत भूमिका का विश्लेषण करना तथा 21वीं सदी में उसकी बदलती पहचान और जिम्मेदारियों को समझना है। शोध में यह देखा जाएगा कि किस प्रकार प्राचीन गौरवशाली परंपराओं से होते हुए मध्यकालीन पितृसत्तात्मक अवरोधों और औपनिवेशिक कालीन सुधार आंदोलनों ने नारी की स्थिति को प्रभावित किया। साथ ही, यह भी प्रश्न उठता है कि स्वतंत्रता के पश्चात संवैधानिक प्रावधानों, शिक्षा और तकनीकी विकास ने नारी की भूमिका को किस सीमा तक परिवर्तित किया है।

इस शोध के मूलभूत प्रश्न इस प्रकार हैं–

1. भारतीय संस्कृति में नारी की परंपरागत स्थिति क्या थी और उसमें समयानुसार क्या परिवर्तन हुए?
2. 21वीं सदी में नारी की भूमिका किस प्रकार सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों में पुनर्परिभाषित हुई है?
3. क्या परंपरा और आधुनिकता का संतुलन भारतीय नारी सशक्तिकरण के लिए एक उपयुक्त मार्ग हो सकता है?

भारतीय संस्कृति में नारी की परंपरागत भूमिका

भारतीय संस्कृति में नारी को सदा ही एक विशेष स्थान प्राप्त रहा है। जहाँ एक ओर उसे सृजनशक्ति, मातृत्व और करुणा का प्रतीक माना गया, वहीं दूसरी ओर उसे त्याग और आदर्श जीवन मूल्यों की प्रतिमूर्ति के रूप में भी प्रतिष्ठित किया गया। नारी के इस बहुआयामी स्वरूप का विकास विभिन्न ऐतिहासिक चरणों से होकर गुज़रा है, वैदिक काल, उत्तर–वैदिक एवं मध्यकालीन युग और आधुनिक पूर्व–औपनिवेशिक समाज।

1. वैदिक काल में नारी की स्थिति

वैदिक काल भारतीय इतिहास में नारी के स्वर्णिम युग के रूप में देखा जाता है। इस काल में स्त्रियाँ शिक्षा, ज्ञान और धार्मिक कार्यों में पुरुषों के समान अधिकार रखती थीं। ऋग्वेद में कई विदुषी स्त्रियों के नाम उल्लिखित हैं, जैसे घोषा, लोपामुद्रा, अपाला, गार्गी और मैत्रेयी। ये केवल धार्मिक अनुष्ठानों की सहभागी ही नहीं थीं, बल्कि उन्होंने दार्शनिक वाद–विवादों में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। गार्गी वाचक्नवी और मैत्रेयी को उपनिषदों में विशेष स्थान दिया गया है, जहाँ उन्होंने याज्ञवल्क्य जैसे महान दार्शनिक से गूढ़ प्रश्न पूछे।[iii]

वैदिक कालीन समाज में स्त्रियों को "ब्रह्मचारिणी" बनने और वेदों का अध्ययन करने का अवसर प्राप्त था। विवाह का चयन भी स्वतंत्र रूप से किया जा सकता था, जिसे "स्वयंवर" परंपरा कहा जाता है।[iv] इस काल में स्त्रियाँ केवल पत्नी या माता की भूमिका तक सीमित नहीं थीं, बल्कि धार्मिक यज्ञों और अनुष्ठानों में समान भागीदारी निभाती थीं। विद्वान Altekar मानते हैं कि "वैदिक युग में स्त्रियाँ केवल शिक्षा और धर्म का ही अंग नहीं थीं, बल्कि वे सामाजिक जीवन की केंद्रस्थ धुरी थीं।"[v]

धार्मिक कार्यों में भी स्त्रियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी। यज्ञ जैसे अनुष्ठान पति–पत्नी दोनों की सहभागिता के बिना पूर्ण नहीं माने जाते थे। इस प्रकार वैदिक काल में नारी केवल पारिवारिक जीवन तक सीमित न रहकर सामाजिक और धार्मिक क्षेत्रों में भी सम्मानित स्थान रखती थी।

2. उत्तर–वैदिक एवं मध्यकालीन युग में स्थिति

उत्तर–वैदिक काल से ही नारी की स्थिति में धीरे–धीरे परिवर्तन होने लगा। समाज अधिकाधिक पितृसत्तात्मक संरचना की ओर अग्रसर हुआ और स्त्रियों की स्वतंत्रता सीमित कर दी गई। स्त्रियों की शिक्षा और वैदिक अध्ययन का अधिकार धीरे–धीरे समाप्त हो गया। विवाह में बाल्यावस्था का प्रचलन बढ़ा और स्त्रियों की भूमिका गृहस्थी तक सीमित होने लगी।[vi]

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

मध्यकालीन युग आते–आते नारी की स्थिति और भी दयनीय हो गई। मुस्लिम शासनकाल में पर्दा प्रथा और बहुपत्नी विवाह जैसी प्रथाएँ प्रचलित हुईं। स्त्रियों की सामाजिक स्वतंत्रता छीन ली गई और उन्हें घर की चारदीवारी तक सीमित कर दिया गया। इसी काल में सती प्रथा, बाल विवाह और कन्या भ्रूण हत्या जैसी कुप्रथाएँ भी प्रचलित हो गईं। इतिहासकार Irfan Habib मानते हैं कि "मध्यकालीन भारत में नारी की स्थिति सामाजिक और धार्मिक रूढ़ियों से बंधी हुई थी, जिसने उसकी स्वतंत्रता को लगभग समाप्त कर दिया था।"[vii]

इसी युग में कुछ अपवाद भी देखने को मिलते हैं। भक्ति आंदोलन और सूफी परंपरा ने स्त्रियों को सामाजिक बंधनों से मुक्त होकर आत्म–अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान किया। मीराबाई और अक्का महादेवी जैसी संत कवयित्रियों ने न केवल धार्मिक आध्यात्मिकता को नई दृष्टि दी, बल्कि स्त्रियों की क्षमता को समाज के सामने उजागर किया।[viii]

फिर भी, समग्र दृष्टि से देखा जाए तो उत्तर–वैदिक और मध्यकालीन युग में स्त्रियों की भूमिका पुरुषों की अधीनता में सीमित रही। यह काल भारतीय नारी की स्वतंत्रता और गरिमा के लिए एक अंधकारमय समय माना जाता है।

3. भारतीय परिवार और समाज में नारी की भूमिका

भारतीय समाज में परिवार सदा से सामाजिक संगठन की आधारशिला रहा है और उसमें नारी की भूमिका केंद्रीय रही है। परंपरागत दृष्टि से नारी को गृहलक्ष्मी, अन्नपूर्णा और पालनकर्ता के रूप में देखा गया है। उसने परिवार में न केवल बच्चों के पालन–पोषण का दायित्व निभाया, बल्कि संस्कृति, संस्कार और परंपरा को पीढ़ी–दर–पीढ़ी आगे बढ़ाने का कार्य भी किया। जैसा कि K. M. Kapadia ने लिखा है "भारतीय परिवार प्रणाली में स्त्री ही वह धुरी है, जो पूरे तंत्र को एकजुट रखती है।"[ix]

गृहिणी की भूमिका में नारी ने घर को केवल भौतिक रूप से ही नहीं, बल्कि आध्यात्मिक और सांस्कृतिक रूप से भी संजोए रखा। मातृत्व को भारतीय संस्कृति में सर्वोच्च स्थान दिया गया है, क्योंकि माता को प्रथम गुरु और संस्कारों की जननी माना गया है।[x] धार्मिक अनुष्ठानों में भी नारी की भूमिका अनिवार्य रही है। चाहे वह करवा चौथ, तीज, छठ या दीवाली जैसे पर्व हों, स्त्रियों की सहभागिता उन्हें सांस्कृतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से गहन अर्थ प्रदान करती है। साथ ही, स्त्रियाँ लोक परंपराओं, गीतों, लोककथाओं और उत्सवों की संवाहक भी रही हैं। इस प्रकार भारतीय नारी ने केवल परिवार की धुरी के रूप में ही नहीं, बल्कि समाज और संस्कृति की परंपरा को जीवित रखने वाली शक्ति के रूप में भी भूमिका निभाई है। यदि समग्र दृष्टि से देखा जाए तो भारतीय संस्कृति में नारी की परंपरागत भूमिका बहुआयामी रही है। वैदिक काल में जहाँ वह शिक्षा, धर्म और समाज की सक्रिय सहभागी थी, वहीं उत्तर–वैदिक और मध्यकालीन युग में उसकी स्वतंत्रता सीमित हो गई। इसके बावजूद, परिवार और समाज में उसकी भूमिका सदा ही केंद्रीय और अपरिहार्य बनी रही। भारतीय परंपरा ने नारी को केवल गृहिणी के रूप में नहीं, बल्कि संस्कृति की संवाहक और सृजन की प्रतीक शक्ति के रूप में भी स्थापित किया।

स्वतंत्रता संग्राम और नारी की भूमिका

भारत के स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास केवल पुरुष नेताओं के संघर्ष तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसमें भारतीय महिलाओं का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। परंपरागत सामाजिक बंधनों और पितृसत्तात्मक व्यवस्था के बावजूद भारतीय नारी ने अपने साहस, त्याग और समर्पण से स्वतंत्रता की लड़ाई को नई दिशा दी। स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी सक्रियता के पीछे दो प्रमुख कारक रहे, सामाजिक सुधार आंदोलनों का प्रभाव और राष्ट्रीय आंदोलन में प्रत्यक्ष सहभागिता। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी महिला अधिकारों की नई दृष्टि ने भारतीय लोकतंत्र और समाज को एक नई दिशा प्रदान की।

1. सामाजिक सुधार आंदोलनों का प्रभाव

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

19वीं शताब्दी में सामाजिक सुधार आंदोलनों ने भारतीय नारी के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। राजा राममोहन राय ने सती प्रथा जैसी अमानवीय कुप्रथाओं का विरोध किया और स्त्रियों को शिक्षा तथा सामाजिक स्वतंत्रता प्रदान करने पर बल दिया। उन्होंने स्त्री–शिक्षा को राष्ट्र की प्रगति के लिए आवश्यक माना।[xi] उनकी प्रेरणा से ब्रिटिश शासन ने 1829 में सती प्रथा पर प्रतिबंध लगाया। इसी प्रकार, ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने बाल विवाह के विरुद्ध तथा विधवा पुनर्विवाह के पक्ष में आंदोलन चलाया। 1856 का विधवा पुनर्विवाह अधिनियम उनके प्रयासों का प्रतिफल था। विद्यासागर का मानना था कि "नारी को सामाजिक बंधनों से मुक्त किए बिना भारत की प्रगति संभव नहीं।"[xii]

ज्योतिबा फुले और उनकी पत्नी सावित्रीबाई फुले ने स्त्री–शिक्षा को नए आयाम दिए। सावित्रीबाई ने 1848 में पुणे में कन्या विद्यालय की स्थापना की, जो भारत में महिलाओं के लिए पहला आधुनिक विद्यालय था। फुले दंपत्ति का यह प्रयास भारतीय स्त्रियों की चेतना को जगाने वाला सिद्ध हुआ।[xiii]

इन सुधार आंदोलनों ने भारतीय समाज में स्त्रियों के प्रति सोच बदलने की शुरुआत की और यही चेतना आगे चलकर स्वतंत्रता संग्राम में महिला सहभागिता का आधार बनी।

2. राष्ट्रीय आंदोलन में महिला सहभागिता

(क) प्रारंभिक नेतृत्व और सहभागिता

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के आरंभिक चरणों में भी महिलाओं की सक्रियता उल्लेखनीय रही। एनी बेसेंट, जो थियोसोफिकल सोसाइटी से जुड़ी थीं, 1916 में होमरूल आंदोलन की प्रमुख नेता बनीं। उन्होंने भारतीय स्वशासन की मांग को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उठाया। एनी बेसेंट का मानना था कि "भारतीय स्त्रियों के सहयोग के बिना राष्ट्रीय आंदोलन अधूरा रहेगा।"[xiv]

(ख) गांधी आंदोलन में महिला योगदान

महात्मा गांधी के नेतृत्व में स्वतंत्रता आंदोलन ने जनांदोलन का स्वरूप लिया, जिसमें महिलाओं की भागीदारी निर्णायक रही। गांधीजी ने स्वयं कहा था "भारतीय स्त्रियों में ऐसी शक्ति है कि यदि वे जाग उठें तो स्वतंत्रता शीघ्र प्राप्त होगी।"[xv]

दांडी मार्च (1930) और सविनय अवज्ञा आंदोलन में हजारों महिलाओं ने सक्रिय भागीदारी की। उन्होंने विदेशी वस्त्रों की होली जलाई, नमक सत्याग्रह में भाग लिया और जेल यातनाएँ सही। कस्तूरबा गांधी, सरोजिनी नायडू और कमला नेहरू जैसी महिलाओं ने इन आंदोलनों को दिशा दी।

(ग) क्रांतिकारी गतिविधियों में महिलाओं की भूमिका

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में कुछ महिलाएँ क्रांतिकारी गतिविधियों से भी जुड़ीं। कल्पना दत्त और प्रीतिलता वादेदार ने चिटगाँव शस्त्रागार कांड (1930) में वीरतापूर्ण योगदान दिया। उषा मेहता ने भूमिगत रेडियो स्टेशन संचालित कर अंग्रेज़ी शासन के खिलाफ प्रचार किया।[xvi]

(घ) द्वितीय विश्व युद्ध और 'भारत छोड़ो आंदोलन'

1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में महिला सहभागिता ऐतिहासिक रही। इस आंदोलन में अरुणा आसफ अली को विशेष ख्याति मिली। उन्होंने बंबई में कांग्रेस का तिरंगा झंडा फहराकर आंदोलन का नेतृत्व किया और उन्हें "भारत छोड़ो आंदोलन की नायिका" कहा गया।[xvii]

(ङ) स्वतंत्रता संग्राम की प्रतीकात्मक नारी शक्ति

स्वतंत्रता संघर्ष में रानी लक्ष्मीबाई, दुर्गावती और अन्य वीरांगनाओं की परंपरा भी महिलाओं की प्रेरणा रही। रानी लक्ष्मीबाई की वीरता ने स्त्रियों को यह संदेश दिया कि स्वतंत्रता केवल पुरुषों का अधिकार नहीं, बल्कि नारी की भी समान जिम्मेदारी है।[xviii]

3. स्वतंत्रता के बाद महिला अधिकारों की नई दृष्टि

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय संविधान ने महिलाओं को समान नागरिक अधिकार प्रदान किए। संविधान की प्रस्तावना, मौलिक अधिकार और नीति–निर्देशक तत्वों ने लैंगिक समानता को सुनिश्चित किया। अनुच्छेद 14, 15 और 16 ने शिक्षा, रोजगार और अवसरों में समानता की गारंटी दी।[xix]

स्वतंत्रता के बाद संसद ने कई विधायी सुधार किए जैसे हिंदू विवाह अधिनियम (1955), हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम (1956) और दहेज निषेध अधिनियम (1961)। इन सुधारों ने महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति को मजबूत किया। साथ ही, स्वतंत्रता संग्राम से उपजी महिला चेतना ने महिलाओं को राजनीति में भी नई भूमिका दी। सरोजिनी नायडू स्वतंत्र भारत की पहली महिला राज्यपाल बनीं, जबकि बाद में इंदिरा गांधी ने प्रधानमंत्री पद तक पहुँचकर यह सिद्ध कर दिया कि महिलाएँ केवल स्वतंत्रता आंदोलन की सहयोगी ही नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण की भी अग्रदूत हैं।[xx]

स्वतंत्र भारत में महिला आंदोलन की दिशा भी स्वतंत्रता संघर्ष से प्रेरित रही। 1970 और 1980 के दशकों में नारीवादी आंदोलनों ने लैंगिक समानता और सामाजिक न्याय की नई मांगों को जन्म दिया।[xxi]

भारत का स्वतंत्रता संग्राम नारी शक्ति के बिना अधूरा होता। सामाजिक सुधार आंदोलनों ने जिस चेतना का बीजारोपण किया, राष्ट्रीय आंदोलन ने उसे फलीभूत किया। एनी बेसेंट से लेकर अरुणा आसफ अली तक और सरोजिनी नायडू से लेकर कस्तूरबा गांधी तक, भारतीय नारी ने त्याग और संघर्ष का परिचय देकर स्वतंत्रता आंदोलन को गति प्रदान की। स्वतंत्रता के पश्चात संवैधानिक अधिकारों और विधायी सुधारों ने नारी की स्थिति को नई दृष्टि प्रदान की। नारी की यह यात्रा केवल स्वतंत्रता तक सीमित नहीं रही, बल्कि यह स्वतंत्र भारत के लोकतांत्रिक ढाँचे और समानतापूर्ण समाज निर्माण की नींव भी बनी। इस प्रकार, भारतीय नारी का योगदान स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है।

21वीं सदी में नारी की भूमिका का परिवर्तन

भारतीय समाज में 21वीं सदी नारी की भूमिका के व्यापक परिवर्तन की सदी कही जा सकती है। परंपरागत गृहिणी और मातृत्व की भूमिका से आगे बढ़कर आज की भारतीय महिला शिक्षा, रोजगार, राजनीति, सामाजिक जीवन और डिजिटल स्पेस तक में सक्रिय भागीदारी निभा रही है। यह परिवर्तन केवल बाहरी रूप से नहीं बल्कि मानसिकता और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी गहरा है। 21वीं सदी की भारतीय नारी परंपरा और आधुनिकता के संतुलन के साथ अपने लिए नए अवसरों और संभावनाओं की राह बना रही है।

1. शिक्षा और रोजगार में वृद्धि

21वीं सदी की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक है महिलाओं की शिक्षा में निरंतर वृद्धि। स्वतंत्रता के समय जहाँ महिला साक्षरता दर 8.86ः थी, वहीं 2011 की जनगणना में यह बढ़कर 65.46 प्रतिशत हो गई और राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) के बाद उच्च शिक्षा में महिला भागीदारी और भी तेज़ी से बढ़ी है।[xxii]

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में महिलाएँ अभूतपूर्व प्रगति कर रही हैं। इंजीनियरिंग, मेडिकल, विधि, प्रबंधन और विज्ञान जैसे क्षेत्रों में उनकी उपस्थिति लगातार बढ़ रही है। Nussbaum का मानना है कि "महिला शिक्षा केवल व्यक्तिगत विकास का साधन नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक समाज की प्रगति की शर्त है।"[xxiii]

रोजगार के क्षेत्र में भी महिलाओं ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। 21वीं सदी की भारतीय महिला कॉर्पोरेट सेक्टर में नेतृत्वकारी पदों तक पहुँची है। इंद्रा नूई (PepsiCo), अरुंधति भट्टाचार्य (State Bank of India) और किरण मजूमदार शॉ (Biocon) जैसी महिलाएँ इसका उदाहरण हैं। टेक्नोलॉजी और विज्ञान में भी महिलाएँ अग्रणी भूमिका निभा रही हैं। इसरो की मंगलयान परियोजना में महिला वैज्ञानिकों की भूमिका ने विश्व स्तर पर भारतीय नारी की क्षमता को सिद्ध किया।[xxiv]

2. राजनीति और निर्णय निर्माण में भूमिका

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

भारतीय राजनीति में 21वीं सदी की महिला अब केवल सहयोगी नहीं, बल्कि निर्णायक भूमिका निभा रही है। पंचायत राज व्यवस्था में 1993 के 73वें और 74वें संशोधनों के अंतर्गत महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण प्रदान किया गया। इस व्यवस्था ने ग्रामीण स्तर पर लाखों महिलाओं को राजनीतिक नेतृत्व का अवसर दिया।[xxv]

आज ग्राम पंचायतों में महिलाएँ न केवल औपचारिक प्रतिनिधि हैं, बल्कि वे विकास योजनाओं, शिक्षा, स्वास्थ्य और महिला सुरक्षा जैसे मुद्दों पर सक्रिय निर्णयकर्ता बनी हैं। वहीं संसद और विधानसभाओं में भी महिला भागीदारी धीरे–धीरे बढ़ रही है। सबसे महत्वपूर्ण कदम 2023 में उठाया गया जब संसद ने "नारी शक्ति वंदन अधिनियम" पारित किया, जिसके अंतर्गत लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण देने का प्रावधान किया गया। इस अधिनियम को भारतीय राजनीति में लैंगिक समानता की दिशा में ऐतिहासिक उपलब्धि माना जा रहा है।[xxvi] यह प्रावधान आने वाले समय में निर्णय निर्माण प्रक्रिया में महिला नेतृत्व को और सशक्त करेगा।

3. सांस्कृतिक और सामाजिक बदलाव

21वीं सदी में भारतीय नारी की भूमिका केवल शिक्षा और राजनीति तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में भी बड़ा बदलाव आया है। विवाह और पारिवारिक संरचना के स्वरूप में परिवर्तन देखा जा रहा है। शहरी क्षेत्रों में महिलाएँ विवाह को व्यक्तिगत चुनाव के रूप में देखने लगी हैं, वहीं विवाह की आयु और स्वरूप दोनों बदल रहे हैं। अंतरजातीय और अंतर्धार्मिक विवाहों में भी वृद्धि हुई है।[xxvii]

पारिवारिक संरचना में भी परिवर्तन आया है। संयुक्त परिवार की जगह एकल परिवारों का चलन बढ़ा है, जहाँ महिला आर्थिक रूप से स्वतंत्र होकर परिवार की मुखिया की भूमिका निभा रही है। ग्रामीण भारत में भी बदलाव देखा जा सकता है। महिलाएँ कृषि, स्वयं सहायता समूहों और ग्रामीण उद्यमिता में सक्रिय हैं। जैसे SEWA (Self Employed Women's Association) जैसी संस्थाओं ने ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में अहम योगदान दिया है।[xxviii]

इन परिवर्तनों से स्पष्ट है कि भारतीय महिला पारंपरिक भूमिकाओं को निभाते हुए भी आधुनिक समाज में नए अवसरों और चुनौतियों को स्वीकार कर रही है।

4. डिजिटल युग और नारी

डिजिटल क्रांति ने भारतीय नारी की भूमिका में अभूतपूर्व परिवर्तन किए हैं। सोशल मीडिया ने महिलाओं को आत्म–अभिव्यक्ति और जनसंचार का नया मंच प्रदान किया है। ट्विटर, फेसबुक और इंस्टाग्राम जैसे प्लेटफार्मों पर महिलाएँ सामाजिक मुद्दों पर अपनी राय व्यक्त कर रही हैं और जनमत निर्माण में भाग ले रही हैं। रुडमज्वव आंदोलन इसका प्रमुख उदाहरण है, जिसने कार्यस्थल पर लैंगिक उत्पीड़न जैसे मुद्दों को सार्वजनिक विमर्श का हिस्सा बनाया।[xxix]

महिला उद्यमिता भी डिजिटल प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से नई ऊँचाइयों तक पहुँची है। स्टार्टअप संस्कृति में महिलाएँ ई–कॉमर्स, टेक्नोलॉजी और सेवा क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं। नायका (Falguni Nayar), ममाअर्थ (Ghazal Alagh) और शार्क टैंक जैसी पहलों ने महिलाओं की उद्यमशीलता क्षमता को सामने लाया है। विश्व बैंक की एक रिपोर्ट बताती है कि भारत में महिला उद्यमिता की वृद्धि दर 20 प्रतिशत प्रतिवर्ष है और इसमें डिजिटल प्लेटफॉर्म का बड़ा योगदान है।[xxx]

डिजिटल युग ने शिक्षा और रोजगार में भी महिलाओं के लिए नई संभावनाएँ खोली हैं। ऑनलाइन शिक्षा, फ्रीलांस कार्य और रिमोट जॉब्स ने महिलाओं को घरेलू जिम्मेदारियों और पेशेवर जीवन के बीच संतुलन बनाने में सहूलियत दी है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

21वीं सदी में भारतीय नारी की भूमिका बहुआयामी और परिवर्तनशील है। वह शिक्षा, रोजगार, राजनीति, सामाजिक जीवन और डिजिटल क्षेत्र में अपनी पहचान स्थापित कर रही है। उच्च शिक्षा और कॉर्पोरेट जगत से लेकर पंचायत और संसद तक, महिला नेतृत्व का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। विवाह और पारिवारिक संरचना में बदलाव ने उसे अधिक स्वतंत्र बनाया है, जबकि डिजिटल युग ने आत्म–अभिव्यक्ति और उद्यमिता के नए अवसर दिए हैं।

फिर भी, इस परिवर्तन के साथ चुनौतियाँ भी बनी हुई हैं जैसे लैंगिक असमानता, कार्यस्थल पर उत्पीड़न और ग्रामीण–शहरी अंतर। लेकिन यह निश्चित है कि भारतीय नारी अब केवल "परंपरा की संवाहक" नहीं, बल्कि "आधुनिकता की वाहक" भी बन चुकी है।

निष्कर्ष

भारतीय संस्कृति में नारी की स्थिति सदैव बहुआयामी और गौरवपूर्ण रही है। प्राचीन वैदिक युग में वह ज्ञान, धर्म और समाज की अग्रदूत के रूप में देखी जाती थी, तो मध्यकालीन पितृसत्तात्मक ढाँचे ने उसकी स्वतंत्रता को सीमित कर दिया। किंतु स्वतंत्रता संग्राम और सामाजिक सुधार आंदोलनों के प्रभाव ने पुनः नारी को संघर्ष, नेतृत्व और आत्मनिर्भरता की दिशा में अग्रसर किया। इस ऐतिहासिक यात्रा से यह स्पष्ट होता है कि नारी की भूमिका कभी स्थिर नहीं रही, बल्कि समाज की बदलती संरचना और सांस्कृतिक मूल्यों के साथ निरंतर परिवर्तित होती रही है।

21वीं सदी में नारी की भूमिका में आए व्यापक बदलाव भारतीय समाज के लिए एक नई संभावनाओं की दिशा खोलते हैं। शिक्षा और रोजगार में वृद्धि ने उन्हें आत्मनिर्भर बनाया है, राजनीति और निर्णय निर्माण में उनकी सक्रिय भागीदारी ने लोकतंत्र को सुदृढ़ किया है और डिजिटल युग में आत्म–अभिव्यक्ति तथा उद्यमिता ने उन्हें वैश्विक मंच पर प्रतिस्पर्धी बनाया है। इस प्रकार आधुनिक नारी अब केवल गृहस्थ जीवन तक सीमित नहीं है, बल्कि वह समाज और राष्ट्र–निर्माण की एक निर्णायक शक्ति बन चुकी है।

महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि यह परिवर्तन केवल आधुनिकता का परिणाम नहीं है, बल्कि भारतीय परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों से भी गहराई से जुड़ा है। प्राचीन संस्कृति में नारी को "शक्ति" और "मातृशक्ति" का स्वरूप माना गया था और आज भी यही ऊर्जा आधुनिक सशक्तिकरण की प्रेरणा बन रही है। परंपरा और आधुनिकता का यह संतुलन ही भारतीय नारी की वास्तविक पहचान को परिभाषित करता है। यदि परंपरा उसकी जड़ों को मजबूती देती है, तो आधुनिकता उसके पंखों को उड़ान देती है।

अतः यह निष्कर्ष स्पष्ट रूप से सामने आता है कि भारतीय समाज में समानतापूर्ण, समावेशी और सशक्त भारत के निर्माण में नारी की भूमिका अनिवार्य है। नारी केवल सामाजिक संरचना की धुरी ही नहीं, बल्कि परिवर्तन की वाहक और प्रगति की संवाहक भी है। इसलिए नारी सशक्तिकरण को परंपरा और आधुनिकता दोनों से ऊर्जा प्राप्त करते हुए एक ऐसी सामाजिक संरचना का निर्माण करना होगा, जहाँ स्त्री और पुरुष दोनों समान अवसरों और अधिकारों के साथ मिलकर एक न्यायपूर्ण और संतुलित समाज की रचना कर सकें।

सन्दर्भ

i- अल्टेकर, ए०एस०, द पोज़ीशन ऑफ वुमेन इन हिन्दू सिविलाइज़ेशन, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1938, पृ०सं० 22

ii- कुमार, आर०, वुमेन इन इंडियन सोसाइटी, आनंद पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2001, पृ०सं० 15

iii- शर्मा, आर० एस०, इंडियाज़ एंशियंट पास्ट, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 2005, पृ०सं० 102

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

iv- अल्टेकर, ए० एस०, द पोज़ीशन ऑफ वुमेन इन हिन्दू सिविलाइज़ेशन, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1938, पृ०सं० 24

v- उक्त, पृ०सं० 31

vi- कोसांबी, डी० डी०, ऐन इंट्रोडक्शन टू द स्टडी ऑफ इंडियन हिस्ट्री, पॉपुलर प्रकाशन, बॉम्बे, 1956, पृ०सं० 128

vii- हबीब, इरफ़ान, मीडीवल इंडिया : द स्टडी ऑफ अ सिविलाइज़ेशन, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, 2007, पृ०सं० 96

viii- थापर, रोमिला, अर्ली इंडिया : फ्रॉम द ओरिजिन्स टू ए०डी० 1300, पेंगुइन, नई दिल्ली, 2002, पृ०सं० 321

ix- कापाड़िया, के० एम०, मैरेज ऐंड फैमिली इन इंडिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, बॉम्बे, 1966, पृ०सं० 213

x- चौधरी, मैत्रयी, फेमिनिज़्म इन इंडिया, काली फ़ॉर वीमेन, नई दिल्ली, 2004, पृ०सं० 44

xi- शर्मा, अरविन्द, राजा राममोहन रॉय : अ क्रिटिकल बायोग्राफी, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 2010, पृ०सं० 92

xii- सेन, अमिय पी०, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ऐंड हिज़ इलूसिव माइलस्टोन्स, रूटलेज, लंदन, 2013, पृ०सं० 115

xiii- ओ'हैनलन, रोज़लिन्ड, कास्ट, कॉन्फ्लिक्ट ऐंड आइडियोलॉजी : महात्मा जोतीराव फुले ऐंड लो कास्ट प्रोटेस्ट इन नाइंटीनथ सेंचुरी वेस्टर्न इंडिया, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, कैम्ब्रिज, 1985, पृ०सं० 86

xiv- फोर्ब्स, जेराल्डिन, वुमेन इन मॉडर्न इंडिया, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, कैम्ब्रिज, 1996, पृ०सं० 84

xv- परेख, भीखू, गांधी'ज़ पॉलिटिकल फ़िलॉसफ़ी : अ क्रिटिकल एग्ज़ामिनेशन, यूनिवर्सिटी ऑफ़ नोट्रे डेम प्रेस, इंडियाना, 1989, पृ०सं० 141

xvi- फोर्ब्स, जेराल्डिन, वुमेन इन मॉडर्न इंडिया, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, कैम्ब्रिज, 1996, पृ०सं० 162

xvii- बसु, अपर्णा, वुमेन इन द फ़्रीडम स्ट्रगल इन इंडिया, विकास पब्लिशिंग, नई दिल्ली, 1976, पृ०सं० 218

xviii- गुप्ता, पी०एस०, 1857 : द हिस्टोरियोग्राफी ऑफ द इंडियन रिवोल्ट, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली, 2007, पृ०सं० 74

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

xix- ऑस्टिन, ग्रैनविल, द इंडियन कॉन्स्टिट्यूशन : कॉर्नरस्टोन ऑफ अ नेशन, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली, 1999, पृ०सं० 45

xx- चोपड़ा, पी०एन०, वुमेन इन द मेकिंग ऑफ मॉडर्न इंडिया, पैट्रिऑट पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1985, पृ०सं० 173

xxi- चौधरी, मैत्रेयी, फेमिनिज़्म इन इंडिया, काली फ़ॉर वीमेन, नई दिल्ली, 2004, पृ०सं० 89

xxii- भारत सरकार, जनगणना भारत 2011, रजिस्ट्रार जनरल ऑफ इंडिया, नई दिल्ली, 2013, पृ०सं० 74

xxiii. नुसबॉम, मार्था सी०, वुमेन ऐंड ह्यूमन डेवलपमेंट : द कैपेबिलिटीज़ अप्रोच, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, कैम्ब्रिज, 2000, पृ०सं० 45

xxiv- राव, आर०वी०, वुमेन साइंटिस्ट्स इन इंडिया, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, 2016, पृ०सं० 119

xxv- मैथ्यू, जॉर्ज, स्टेटस ऑफ पंचायती राज इन द स्टेट्स ऐंड यूनियन टेरिटरीज़ ऑफ इंडिया, कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग, नई दिल्ली, 2000, पृ०सं० 203

xxvi- दि हिन्दू, वुमेन'ज़ रिज़र्वेशन बिल पास्ड, कस्तूरी ऐंड संस, चेन्नई, 2023, पृ०सं० 1

xxvii- उबेरोई, पेट्रिशिया, फ़्रीडम ऐंड डेस्टिनी : जेंडर, फैमिली ऐंड पॉपुलर कल्चर इन इंडिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 2006, पृ०सं० 92

xxviii-भट्ट, एला, वी आर पुअर बट सो मेनी, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली, 2006, पृ०सं० 57

xxix- रॉय, श्रीरुपा, चेंजिंग मीडिया, चेंजिंग सोसाइटी, सेज पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2020, पृ०सं० 133

xxx- विश्व बैंक, वुमेन एंटरप्रेन्योर्स इन इंडिया : अ रोडमैप फ़ॉर ग्रोथ, विश्व बैंक प्रकाशन, वाशिंगटन डी०सी०, 2021, पृ०सं० 88